वर्तमान विकास का विभ्रम और गांधीवादी विकल्प : प्रो. परमानंद सिंह

'गांधी दर्शन एवं ग्रामीण विकास' विषय पर पुनश्चर्या पाठ्यक्रम का आयोजन

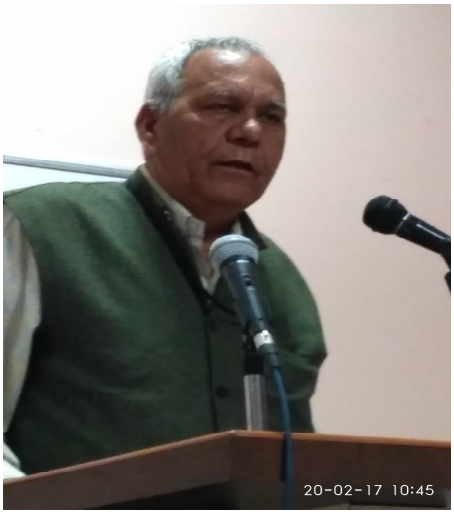

वर्धा, 25 फरवरी, 2017; अगर हमें समानता, स्वतंत्रता, सम्मान पर आधारित मानव संतति का विकास सुरक्षित रखना है तो हमें गांधी के क्षमतावान मनुष्य, ऊर्जावान नेतृत्व एवं सेवा को समर्पित युवा शक्ति एवं विकेंद्रित ग्रामीण उद्यम पर आधारित प्रबंधन चाहिए जो सही अर्थों में सबका साथ और सबका विकास के लक्ष्य को प्राप्त करने में सहायक होगा। उक्त उद्बोधन ति.मा.भा. विश्वविद्यालय, भागलपुर के गांधी विचार विभाग के अध्यक्ष प्रो. परमानंद सिंह ने व्यक्त किए। वे महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के महात्मा गांधी फ्यूजी गुरुजी समाज कार्य अध्ययन केंद्र तथा मानव संसाधन विकास केंद्र, राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज नागपुर विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित 'गांधी दर्शन एवं ग्रामीण विकास' विषय पर आयोजित पुनश्चर्या पाठ्यक्रम के दौरान बोल रहे थे।

प्रो. परमानंद सिंह ने 'विकास के गांधीवादी प्रतिमान : एक विश्लेषण' विषय पर चर्चा करते हुए कहा कि गांधी का विकासात्मक प्रतिमान अपने व्यापक फलक पर विकास का ग्रामीण सिद्धांत है जिसे विकास का विकेंद्रीकरण सिद्धांत भी कह सकते हैं। गांधीजी ने अपने विकास प्रतिमान विश्लेषण में अपने अनुभव का सहारा लेकर एक ऐसे विकास अर्थशास्त्र की रचना करते हैं जिसके केंद्र में 125 करोड़ भारतीयों के लिए रोजगार का संकल्प है। इस अवसर पर डॉ. बी.मिश्रा ने भी विचार व्यक्त किए। म.गां.फ्यू.गु. समाज कार्य अध्ययन केंद्र के निदेशक व पुनश्चर्या पाठ्यक्रम के संयोजक प्रो.मनोज कुमार ने संचालन किया। इस पाठ्यक्रम में अन्य स्थानों तथा विवि के 28 प्रतिभागियों में डॉ. सुप्रिया पाठक, डॉ. राकेश मिश्रा, डॉ. बीरपाल सिंह यादव, डॉ. वीरेन्द्र प्रताप यादव, डॉ. सुरजीत कुमार सिंह, डॉ. चित्रा माली, डॉ. रेणु सिंह, डॉ. अनवर अहमद सिद्दीकी, डॉ. अख्तर आलम, डॉ. सत्यम कुमार सिंह, डॉ. अमित विश्वास, डॉ. चित्रलेखा अंशु, डॉ. राजीव कुमार, चंदन कुमार, नीरज कुमार, डॉ. भालचंद्र जमधाड़े, आरती कुमारी, अस्मिता राजुरकर, अनुपमा कुमारी, ज्योति कुमारी, डिसेन्ट कु. साहू, जोगदंड शिवाजी सहित अन्य शोधार्थी भी उपस्थित थे।